



सुलाई
वलि ७ धौकी
अर्पा
अपुषा

धीमन्तु देवता येनमः॥
मालको जो लनवोय॥
नो सुला काय ॥ ३॥ का
आत्मतत्वाय स्वाहा॥ जी
विद्यातत्वाय स्वाहा॥ इ
शिवतत्वाय स्वाहा॥ ३॥
सुलाईलीस आनया
चके॥ ॥ स्त्रानेनमः॥
चन्दनमः॥ रक्तचन्दन
नमः॥ पुष्पनमः॥ इद
मक्षतनमः॥ ॥ रुकन
आचमन॥ ३॥ उथे ऊ
लंख किम्बजोऊ सूर्यार्घ
॥ अस्मत् नित्य कर्म देवा
र्वनकर्तुं श्रीसूर्याय कु
लमार्त एड मूर्त्तये
येषोर्घनमः॥ पुष्पं २

देया लाहाती नस्वान जो अव
गुरु नमस्कार या यम लाई सं
॥ अख एउ म न्द ला कार ० ॥
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु ० ॥ ॥
गुरु मन्दला सनाय नमः ॥
सलाइलीस गुरु मन्दला स
नाय नमः ॥ बलिपात्रा सना
य नमः ॥ बलिपात्र स ॥ जल
पात्रा सनाय नमः ॥ अर्घा स ॥
शंख पात्रा सनाय नमः ॥ शंख
स ॥ अर्घ पात्रा सनाय नमः ॥ अर्घ्य
त्र स ॥ आत्मा सनाय नमः ॥ ष
वमुडे नवल स ॥ कूर्मा सनाय
जवमुडे नवल स ॥ के गोउ अ
अर्घ पात्र सधु अवने रेवलि
तिने ॥ ऐं ५ किणि विचे कोक
नायैः अस्त्राय फर ॥ २ ॥

ऐं फर वज्रयं जरेखा हा ॥
ऐं वरमकुले कुलमवले जा
कीं फर खा हा ॥ वामे गुरु
भ्यो नमः ॥ दक्षिणे गणपते
नमः ॥ अये श्रीस्वदेवता
ये नमः ॥ ऐं ५ किणि किणि
विचे कोक नायैः अस्त्रा
य फर ॥ यं रं वं प्राणा
यामः ॥ ऐं ५ किणि किणि
विचे कोक नायैः अस्त्रा
य फर ॥ ऐं नमो न
गवति हृत्क मलायै जां श्रीं
अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ह्यै कु
त्रिकायै कुलदीपायै जीं
श्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ जां जीं
ऊं वरं रशिखे ऊं श्रीं म धा
माभ्यां नमः ॥ ऐं चोरे स चो

रे अघोरा मुखिवक्ररूपायै कौं
श्रै अनामिकाभ्यां नमः ॥ अघो
रौ महंतारिकायै कौं श्रौं कनि
ष्ठकाभ्यां नमः ॥ ऐं किर्तिवि
० करतलपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ॥
एवं हृदयादिषडंगं न्यासः
ऐं हरसरजलपात्रभृदारका
यपादूकां पूजयामी नमः ॥
३॥ अने अर्घास ॥ ऐं हरस
रशंखपात्रभृदारकायपा
दूकां पूजयामी नमः ॥ ३॥
ऐं नमो भगवति हृत्कमला
यै कौं श्रौं हृदयाय नमः ॥
इत्यादिषडंगं नेत्रे संपूजा
आवाहनस्थापनचन्दना
धानपुष्पं नमः ॥ नेत्रे सं ॥

मुद्रा केने नेत्रे सं ॥ लंखन
हाये देवस्के थ व के सं ॥
ऐं कुक्षिकायै विप्रदे कुल
दीपायै धीमहि तन्न कुक्षि
प्रबोदयाम् ॥ ॥ अर्घपात्रपू
जा ॥ ॥ ऐं हरसर अर्घपात्रभ
ृदारकायपादूकां पूजयामी नमः
॥ ३॥ त्रिकुटमुद्राचारोदनं ॥
ग्लं ग्लं ग्लं ग्लं ग्लं पंवरत्नाय
नमः ॥ ॥ षडंगेन पूजनं ॥ ॥
आवाहनादियोगिमुद्रांतं ॥ ॥
भुतमुद्रिः ॥ ऐं कौं श्री ह्रीं क्लौं
ह्रीं ह्रीं श्री कौं ऐं ॥ ॥ चन्दना
दि आत्मपूजान्तं ॥ ॥ वलीसर्था
स्य आवाहनयाय ॥ ॥ इदमा
वाहयिष्ये आवाहयामी नमः

सननमः॥ लायनमः॥ शवा
सनायनमः॥ मयूरासनाय०
मूषकासनायनमः॥ थौप्रष्ट
रक्षीय दंभकीदेवी महा ध्या
क्षक्षेत्रपालाय पादुकां पूज
यामीनमः॥ बलीगृह्ण २ स्वाहा
॥ श्रीकृष्णकुलपुत्रवतुकना
थाय०॥ बलि०॥ ग्लौकुल
गणे श्वराय०॥ बली०॥ आ
काहतायाय नचन्द्रनाक्षत्र
पुष्पं नमः॥ दन्तर्जनी ग
जमुद्रां दर्शयेत्॥ ॥ तर्प
ण॥ श्रीनाथाय नमः॥ श्री
सिद्धिनाथाय नमः॥ श्रीकु
जेशनाथाय नमः॥ ॥ स्वा
सनमः॥ ॥ पद्मासनाय
पादुकां॥ दयासनाय०॥
सिंहासनाय०॥ श्रीकुजि

केशवरक्षिकदेवीयेत
त्पाद्यं नमः॥ अर्घ्यं नमः॥
आवमनीयं नमः॥ आनं
मः॥ वन्दनं नमः॥ रक्तवन्द
नं नमः॥ पुष्पं नमः॥ इदम
क्षतनमः॥ ॥ त्रयांजलि
॥ करसरयश्चिममलस्या
मभधारकाय पादुकां पूज
यामीनमः॥ ३॥ बलीगृह्ण
स्वाहा॥ रुद्रप्रेतासनाय न
मः॥ खर्केश्वीसिद्धिलक्ष्मी
पादुकां पूजयामीनमः॥ ३
बलि॥ ३०००० गुह्यकाली
देवीपादुकां पूजयामीन
मः॥ ३॥ बलि॥ ऐं कीं मौं
त्रिपुरसुन्दरीदेवीपादु
कां पूजयामीनमः॥ ३॥
बलि॥ ॥ षडंग ॥ ॥

1.778	ASTIA ARCHIVES
-------	----------------

1.778

ASTIA ARCHIVES



वलि॥ ॥ गायत्री नवलि॥ ॥
ऐक्यं यै विष्णु हे कुल दीपा
यै श्रीमहि न न्त कुक्षि प्रवो
दयान् ॥ वलीं गृह्ण स्वाहा ॥
ताकमहावलि विधे ॥ ॥
शांक्षवपा लाये वलीं गृह्ण
स्वाहा ॥ वां वदु कनाथा
य वलीं गृ० ॥ यां योगिणी भ्यो
वलिं ० ॥ ॥ हसरवर्कें सिद्धि
वामुण्डायै वलिं ० ॥ ॥ ग्लौ
कुल गणे श्वराय वलिं ० ॥
॥ ऐं आकाशवारिणी भ्यो व
लिं ० ॥ कूकरवीर शमशानाधि
पते वलीं गृह्ण स्वाहा ॥ ॥
सर्वे भ्यो भूते भ्यो सर्वे भ्यो पिशा
चे भ्यो दाकिणी भ्यो साकिनी
भ्यो मम इष्ट देवता भ्यो स्थान
देवता भ्यो इमां पञ्चां वलीं गृह्ण
स्वाहा ॥ ॥ आवाहनस्यापि
नवन्दनाक्षतपुष्पनमः ॥ ॥

धेनु योनि मुद्रां दर्शयेत् ॥ ॥
नमः ॥ श्रीनाथाय नमः ॥ श्री
सिद्धिनाथाय नमः ॥ श्रीकुञ्जी
शनाथाय नमः ॥ ॥ धौ बोद्धा
य ॥ ॥ स्वयं दीपनै वैशादि
संकल्प सिद्धिरस्तु ॥ ॥ इदं नै
वेद्यं नमः ॥ ॥ सिंधा हलजोड
ने ॥ प्राणादि पंच वायु भ्यः स्तु
ति ॥ ह्राय ॥ नम्री भूय प्रनम
त् ॥ ॥ स्ववलास अर्घ्य पात्र
या जल नत्रिकोणा वीथवे
तर्त्तन के त्रे जपयाये ॥ ॥
धौं स्वाहा १० ॥ श्री जी स्वाहा
१० ॥ ग्लू स्वाहा ॥ ॥ हर स
२ ॥ १० ॥ स्वर्के स्वाहा १० ॥ ॐ
प्रस्वाहा १० ॥ ऐं श्री मौ स्वा
हा १० ॥ ॥ अर्घ्य पात्र या
जल नहाये जल मान आदी
सली ई त्वं जपया स्वा न षा
म ॥ वाकिले उगुली सशंभ

याजलतस्येनापंमलाईसदाय
॥ रत्नपंगुहानसाहा ॥ ॥
अर्घ्यायाजलन, भूमिसमंद
सदयके ॥ केवो ५ कोम ॥ त्वा
नतमे ॥ स्त्रीनमाय ॥ ॥
अखण्डमन्दलाकारं ॥ श्री
संबन्ती ॥ स्मामारक्ता ॥ उत्
कलांनुज ॥ यासान्नका ॥
पामाकुण्डलिनी ॥ अत्येन
शरणंतात्ति ॥ ॥ योनिमु
द्राप्रणाम ॥ तप्येण श्रीन
थादि ॥ ॥ आचमन ॥ ॥
किंगीताते ॥ मण्डलसत्त्वा
नकोकायसलाइवोउत्सा
ननापलावकं अर्घ्यायात्रस
धुअवस्वान, नंधकेदुये
॥ हनकनोसुखाकाय ॥ ॥
न्यासलिकाय ॥ ॥ मुद्रा
उत्ताउ अतिनयन ॥ ॥

लखकिग्वलकाये अर्घ्यायात्र
यालंखकास्ये वलिपात्रस
वाकलउयकं, ताने ॥ ॥ ली
नंगगदखाहा ॥ ॥ वलीस
अर्घ्यायात्रयाजलवितुनहाय
॥ किलिविबेकोंकणायेऽः
अस्त्राफद २ ॥ ॥ अस्त्राय
फद २ ॥ लाहापादाय २ ॥ ॥ अः
अस्त्रायफद २ ॥ माचीनमुय
के २ ॥ देवालाहातीनसलाई
वली, अर्घ्यायात्र, नुगीलेक
यातस, धिये ॥ ऐं कीं श्रीं
हमके, हसो, संहारमुद्रान
स्वस्थानवासोभवतु ॥ ॥
स्वस्थानमुद्रान, सलाइली
सवोउस्वान, कायात्रतात्र
अव वलीसतोलतके ॥ ॥
शंख, अर्घ्या, अर्घ्यायात्रस, को
उस्वान, वलीसतये ॥ ॥

लंखु मुलुतये नो सुलाका
ये ॥ ॥ अर्घां शं स व या ज
लतये अर्घां शं उ व शा
क्षिथाय ॥ ॥ अस्मत्तनित्यं
कर्म देवार्थे न सं पृणार्थे क
कर्म शाक्षिणे श्रीमर्षाय यय
षोर्धे नमः युष्मन् नमः ॥ ॥
श्रीमर्षाय नमः ॥ श्री इष्ट
देवताभ्यो नमः ॥ ॥ सला
ईक्षाने वरणोदक मार्ज
नयाये ॥ सला ई नातुका
व वलिवाये ॥ ॥ नो सुलाका
या वनिर्माल्ये पूजायाये ॥
ॐ श्री वराहनाथाय निर्माल्य
वालिने नमः ॥ ॥

नरसिहाम्ना ॥ ॥ ॐ क्षीं नमो भ
गवते नृसिंहाय ज्वाला मालिने दी
पदं दद्यान्निनेत्राय सर्वरक्षोघ्नाय
सर्वज्वरविनाशिने सर्वभूतविना
शिने रहरहरक्षरक्ष हूँ हूँ हूँ फट् स्वा
हा ॥ ॥ ॐ श्री वराहनाथाय नमः ॥
सर्वतो मुखं ॥ नृसिंहं भीषणं भद्रं मृ
त्योर्मृत्युना मा स्पृही ॥ ॥ ॥